शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 9
Issue 1
15 January, 2018

नीलम राकेश की बालकहानियों के संदर्भ में यथार्थ और कल्पना

बीज शब्द :

यथार्थ और कल्पना का द्वन्द सर्वत्र मनोजगत में घटित होता है। साहित्य इससे अछूता नहीं है, लेकिन साहित्य कल्पना के सहारे जटिल यथार्थ को उद्‌घटित करता है और बालसाहित्य जो बाल मन के कोरे स्नेह पर सीधे-सीधे खींचे हुए ताने-बाने को कल्पना के प्रयोग से रंग और चित्राकृतियाँ उभारता है। इसलिए बाल कहानियों में यथार्थ और कल्पना का उचित सामंजस्य आवश्यक है।

यदि व्यक्ति के हृदय में सेवा-भाव है तो वह अवसर स्वत: खोज लेता है, इस विश्वास को चरितार्थ करती हुई, समाज व साहित्य की सेवा के लिए किसी अवसर विशेष की प्रतीक्षा न करनेवाली नीलम राकेश एक प्रतिष्ठित बालसाहित्यकार हैं। आपके द्वारा लिखित बालकहानियाँ, 'हिम्मत से जीती बाजी', 'आतंकवादी और नन्हा अंकित', 'फूलों की बगिया', 'क्रिकेट का कमाल', 'ठग से ठगी', 'अनोखी छुट्टियाँ' नामक छह संग्रहों में प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'अंजाना द्वीप' नामक बालउपन्यास, 'यह कैसा चक्कर है' (लम्बी कहानी) तथा 'नया सवेरा', 'उजाले की ओर', 'यह धुंध कब हटेगी', 'मुझे बचा लो माँ' जैसे नाटक लिखकर, बालसाहित्य संसार को समृद्ध किया है। 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' द्वारा सन् 2000 तथा 2001 में आपकी बाल-कहानियाँ पुरस्कृत की गई हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्‌देश्य, नीलम राकेश की बालकहानियों में निहित यथार्थ और कल्पना को उजागर करके, बाल व्यक्तित्त्व-विकास में बालकहानियों के योगदानको प्रतिपादित करना है।

*****

डॉ० प्रभा पंत
M.B.G.P.G. कॉलेज
हलद्वानी (नैनीताल)
E-mail: dr.prabhapant@gmail.com

चन्द्रावती जोशी
(शोधछात्रा)
E-mail: chandapth@gmail.com

नीलम राकेश की बालकहानियों के संदर्भ में यथार्थ और कल्पना

यथार्थ सदैव चलायमान होता है अर्थात् निरन्तर चलते रहने वाला घटनाक्रम; 'कल्पना एक चेतना और आश्चर्यजनक मानसिक प्रक्रिया है, जिससे हम अपने पिछले अनुभव के आधार पर किसी नई वस्तु का निर्माण करते है।'[1] यथार्थ को साहित्य से जोड़ना जटिल है, परन्तु लेखक तथा साहित्यकारों ने यथार्थ को अपने लेखन का आधार बनाया है, कोई भी लेखक या कवि चाहते हुए भी यथार्थ से दूर नहीं जा सकता; क्योंकि सबसे बड़ा यथार्थ, सत्य हमारे अन्दर होता है जो अवसर पाते ही बाहर आ जाता है। यथार्थ का सीधा सम्बन्ध जीवन की जटिलता, संघर्ष, उतार-चढ़ाव आदि से होता है। अत: जब कोई साहित्यकार जीवन के सरोकारों को और कल्पना को अपने साहित्य से जोड़ लेता है तो उससे साहित्य में सजीवता एवं विशिष्टता आना स्वाभाविक है।

बालकहानियों में कल्पना के अतिरेक से ही लेखक, शेर और चूहे की मित्रता करवाता है; कभी हाथी, ख़रगोश, बंदर की सूझ-बूझ से बच्चों को पर्यारण संरक्षण सिखलाता, तो कभी मित्रता का पाठ पढ़ाता है; इतना ही नहीं मानवीय व सामाजिक-मूल्यों का संदेश भी पहुंचाता है, 'हाथी दादा ने सबको शांत करके बैठाया और बोले- तुम सबने यही ग़लती की है। पहले तुम सब जानवर पक्षी, रेंगने वाले जीव व जलचर बन गए।... ... ...उसके बाद तुम्हारा और विभाजन हुआ, तुम सिर्फ़ अपने-अपने परिवार तक ही सिमटकर रह गए।'[2] कल्पना में वह शक्ति है जो कभी किसी नए निर्माण के लिए प्रेरित करती है तो कभी उनमें सौहार्द्र और सहयोग की भावना का विकास करती है तथा पाठक को जिज्ञासा की डोर से बाँधे रहती है, 'एक थी गिलहरी। नन्हीं सी, प्यारी सी।...एक बड़े पेड़ पर रहती थी।...उसी पेड़ के नीचे एक बिल था। बिल में एक चूहा रहता था।' या 'सुहास बचपन से ही तेज बुद्धि बालक था। कक्षा में सदा प्रथम आता था...उसका चचेरा भाई प्रभास भी पढ़ाई करने के लिए गाँव आ गया।'[3] या 'सौराज और सुमित चुपचाप घर के बाहर निकल गए।'[4] आदि वाक्यों को पढ़कर, निश्चित ही बच्चा आकृष्ट होगा और उसकी जिज्ञासा बढ़ेगी, परिणामत: वह कहानी समाप्त किए बिना नहीं उठेगा अर्थात् उसकी एकाग्रता में वृद्धि होगी और एक ही स्थान पर स्थिर होकर बैठने का अभ्यास भी बढ़ेगा।

साहित्य में, यथार्थ एवं कल्पना का संबध पुष्प और सुगंध जैसा है; अत: नीलम राकेश ने अपनी बालकहानियों में यथार्थ एवं कल्पना का भरपूर प्रयोग किया है। बालकहानियों में बालमनोरंजन एवं मार्गदर्शन करने की भी अद्‌भुत क्षमता होती है; अत: आदिकाल से ही बालकहानियाँ बच्चों को लिए आकर्षित करती रही हैं। नीलम राकेश ने अपनी बाल कहानियों में, मनोरंजन के साथ समाज में परिव्याप्त यथार्थ घटनाओं एवं समस्याओं को भी दर्शाया है। बच्चों को जागरूक करने के लिए, उन्होंने 'आतंकवादी और नन्हा अंकित' कहानी में, अंकित नामकएक ऐसे बुद्धिमान बालक का चित्र उकेरा है जो अपने बुद्धिचातुर्य से अपनी ही नहीं, अपनी माँ के प्राणों की भी रक्षा करता है, 'आप चिन्ता मत करिये। इन लोगों को शक नहीं होना चाहिए कि हमें इन पर शक है। आप मेरा दूध दीजिए, मैं इनके साथ बैठकर दूध पीऊँगा। इन्हें तसल्ली हो जायेगी कि हमें कोई शक नहीं है, फिर मैं ट्यूशन के लिए चला जाऊँगा।'

'पर तू ट्यूशन कहाँ जाता है।'

'अरे माँ, इन्हें क्या पता कि मैं ट्यूशन नहीं जाता हूँ। ट्यूशन के बहाने से मैं पापा के मित्र, इंस्पेक्टर अंकल को सूचना दे कर आ जाऊँगा।'[5] इस तरह बच्चे की बुद्धिमानी और सूझ-बूझ से आतंकवादी पकड़े जाते हैं।

अधिकांशत: बच्चे, यथार्थ से कोसों दूर कल्पनालोक में विचरण करते हुए खुश रहते हैं; किन्तु परिस्थितियाँ परिवर्तित होती रहती हैं, अत: बच्चों को जीवन के यथार्थ से परिचित कराना भी नितांत आवश्यक होता है। बच्चों के समक्ष जीवनसत्य को उसके नग्नरूप में प्रस्तुत करने से उनका कोमल मन आहत हो सकता है, इसलिए आवश्यक है कि बालकहानियों में यथार्थ के साथ कल्पना का समावेश करके, विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए उनका उचित मार्गदर्शन किया जाए। आज का सबसे बड़ा सत्य है, परिवर्तित होते जीवनमूल्य तथा पारम्परिक नैतिकमूल्यों का ह्रास। नीलम राकेश ने अपनी कहानियों में अनेक प्रेरक प्रसंगों द्वारा त्याग, एकता, कर्त्तव्य आदि नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डाला है। कर्त्तव्यबोध पर आधारित कहानी 'शीबा का निर्णय' में 'शीबा' भविष्य की चिंता किए बिना अपनी वार्षिक परीक्षा को दाँव पर

---

1. पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, 2014, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा-2, पृ.सं.- 352
2. अनोखी छुट्टियाँ, सन् 2006, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.- 45
3. आतंकवादी और नन्हा अंकित, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.-40
4. अनोखी छुट्टियाँ, सन् 2006, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.- 21
5. आतंकवादी और नन्हा अंकित, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.- 13

लगाकर, आतंकवादियों से समाज की रक्षा करती है, 'शीबा को समझने में देर नहीं लगी कि ये कोई आतंकवादी गिरोह है जो पुल उड़ाना चाहता था। एक ओर उसकी वार्षिक परीक्षा थी, और दूसरी ओर हजारों जीवन। यह निर्णय की घड़ी थी; उसे तुरन्त कुछ करना था। आठ बजे थे, साढ़े नौ बजे तो इस पुल पर तिल रखने की जगह नहीं होती।... तेजी से साईकिल चलाती हुई, वह स्कूल पहुँची।...परीक्षा आरम्भ हो चुकी थी। टीचर ने उसे परीक्षा भवन जाने का आदेश दिया। वह तेजी से दौड़ती हुई प्रिंसिपल के ऑफिस पहुँची और सारी घटना उन्हें बताकर, पुलिस की मदद माँगने का अनुरोध किया।'[6]

अपनी काल्पनिक कहानियों में भी नीलम राकेश ने यथार्थ का सम्मिश्रण करके, उन्हें सजीवता प्रदान की है। 'अनाज का आदर' मूल्यों पर आधारित यथार्थपरक एवं महत्त्वपूर्ण कहानी है। लेखिका जानती है कि बालमन को उपदेश से अधिक व्यवहार प्रभावित करता है; अत: उसने अमित के मन में जिज्ञासा जाग्रत करने के उद्देश्य से, उसकी माँ को कमरे में बिखरे चावल के एक-एक दाने को चुनते हुए दिखाया है। घर में चावल होते हुए भी माँ को चावल का दाना-दाना चुनते देखकर, अमित चौंकता है, और माँ से इसका कारण पूछता है; प्रश्न पूछने पर माँ उसे फटकारती नहीं, बल्कि स्नेहपूर्वक समझाती हुई कहती है, 'यदि हम सब इसी तरह थोड़ा-थोड़ा अनाज बरबाद करते रहे तो पूरे देश में जो अनाज फेंका जाएगा, उसे यदि इकट्ठा कराया जाए तो वह कई सौ टन होगा और यह बरबादी प्रतिदिन की है।...जरा सोचो भारत जैसे देश में, जहाँ हजारों गरीब लोग रहते हैं, जिन्हें दोनों समय का भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता। क्या अनाज की इस तरह की बरबादी क्षमा योग्य है?'[7]

इस तरह वह बच्चा जो अनेक बार समझाने पर भी हर बार अपनी थाली में खाना बचा दिया करता था, उसने किसान की मेहनत और निर्धन की भूख को समझा और अनाज के महत्त्व को समझने लगा। नीलम राकेश ने अपनी कहानियों में बाल्यकाल के यथार्थ चित्र उकेरते हुए, उसमें कल्पना के विविध रंग भरे हैं। बालमन की कल्पनाएँ और विचार, सुगंधित हवा के झोंके की तरह अपने परिवेश को महकाकर, क्षणभर में चली जाती हैं, किन्तु बाल्कालीन संस्कारों की छाप उनके मनोमस्तिष्क में बनी रहती है। बच्चे अपने घर-परिवार में जिस तरह के क्रियाकलाप और आचार-विचार देखते हैं, उनका अर्थ एवं भावना को समझे बिना अनुकरण करने लगते हैं, 'हे भगवान मेरी मदद करना। मेरी प्रार्थना सुन लेना। भारत की राजधानी आगरा को बना देना। हे भगवान ज्यादा दिन के लिए न सही थोड़े दिनों के लिए बना दो। प्रभु थोड़े दिनों के लिए आगरा को बना दो...'ऐ खखखख नीटू, ये क्या हो रहा है?' ... ...'मैं पूजा कर रहा हूँ माँ।'... ... ...भला दिल्ली के राजधानी होने में तुम्हें क्या दिक्कत है? और आगरा के राजधानी बन जाने से तुम्हें क्या लाभ है?'

'माँ, बहुत लाभ है। आप नहीं समझेंगी।'... ... ...'मैं भी तो जानूँ तुझे क्या लाभ होने वाला है।' ... ...'माँ, आज परीक्षा में तीन प्रश्न पूछे गये थे। भारत की राजधानी का नाम बताओ? दूसरा भारत के राष्ट्रपति कहाँ रहते है? तीसरा सुप्रीम कोर्ट कहां स्थित हैं? 'तो खखखख? ...'

'तो क्या मैं ... मैं तीनों प्रश्नों के उत्तर में आगरा लिख आया हूँ।'[8]

बाल कहानियों के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष है; शिक्षा और प्रेरणा। इन्हें ध्यान में रखकर, जब कोई रचनाकार अपनी कहानी में, यथार्थ के साथ बालमन के अनुरूप कल्पना के रंग भरकर, उसे सहजग्राह्य भाषा-शैली में प्रस्तुत करता है तो वह कहानी बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन ही जाती है, 'हाथी दादा का इशारा पाते ही चारों ओर के पेड़ों से निकलकर पक्षियों ने आकाश को ऐसे ढक लिया कि सूर्य की एक किरण तक जंगल में प्रवेश नहीं कर सकी। पेड़ों को काटने को तैयार इंसान अचानक फैले अंधकार से चकित हो ऊपर की ओर देखने लगे। तभी हाथी की चिंघाड़ सुनाई दी... सामने से शेर, चीता और जंगली भालू आते दिखाई दिए। अपनी जान बचाने के लिए वे सब कुछ छोड़-छाड़कर ट्रक की ओर भागे और गिरते-गिरते उसमें सवार होकर, शहर की ओर रवाना हो गए। चंपक वनवासियों की रक्षा अभियान की यह प्रथम विजय थी जिससे पूरा जंगल गुंजायमान हो उठा। आखिर सबकी एकता रंग लाई थी।'[9]

बालकहानियाँ जहाँ एक ओर, बच्चों को दिग्भ्रमित होने से बचाती हैं, वहीं दूसरी ओर उनका मार्गदर्शन भी करती हैं। आज के बदलते परिवेश, सिमटते परिवारतथा अतिव्यस्ततम दिनचर्या के परिणामस्वरूप, अभिभावक अपने बालक को प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त कुछ और नहीं सिखा पाते; ऐसे में बालकहानियों द्वारा बालकों में परोपकार, प्रेम, सहयोग, करुणादि मानवमूल्यों को विकसित करके, उनके चारित्रिक-विकास सहज ही किया जा सकता है। 'उपयोगी उपहार' कहानी की पात्र, एक छोटी सी

6. उपरिवत्
7. आतंकवादी और नन्हा अंकित- पृ.सं. 101, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद
8. आतंकवादी और नन्हा अंकित- पृ.सं. 47, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद
9. हिम्मत ने जीती बाजी- पृ.सं. 38, सन् 2006 अंकिता प्रकाशन, इलाहाबाद

बालिका अपनी कामवाली बाई की शिक्षा के लिए, प्रयास करती है जो वास्तव में प्रेरणादायी है। आज, जबकि अनेक निर्धन परिवारों के बच्चे भी अपने जन्मदिन के अवसर पर उपहार की लालसा में, अपने माता-पिता पर पार्टी का आयोजन करने के लिए, दबाव डालते दिखाई देते हैं, ऐसे मेंस्नेहा अपनी माँ को यह कहकर चौंका देती है, 'मैं अपने जन्मदिन पर कोई पार्टी नहीं करूँगी बल्कि वो सारा पैसा बचाकर, मैं चाहती हूँ कि बीना दीदी को गिफ्ट कर दूँ।'

'कौन बीना दीदी?' ... ...'वही जो अपने यहाँ काम करने आती है।'... ... ...माँ वो अपनी पढ़ाई भी पूरी करना चाहती है, पर काम को छोड़ नहीं जा सकती। इसलिए प्राइवेट आठवीं की परीक्षा देना चाहती है, पर इतना पैसा उसके पास बचता ही नहीं कि परीक्षा का फार्म भर सकें और आठवीं की किताबें खरीद पायें।... ... ...इसीलिये मैं सोच रही थी कि इन पैसों से दीदी का परीक्षा फार्म भरवा देंगे और उनकी किताबें खरीद कर दे देंगे।'[10] प्रस्तुत कहानी यथार्थ और कल्पना का ऐसा समन्वय है जो बालकों के साथ ही बड़ों के सोच को विकसित करने का भी कार्य करती है।

परिवार के सदस्यों की प्रत्येक क्रिया-प्रतिक्रिया की छाप बच्चे के मनोमस्तिष्क पर भी पड़ती ही है। बालक कच्चे घड़े के समान होताहै, यदि उनके सोच को यत्नपूर्वक निर्मित न किया जाए तो तनिक-सा आघात लगने पर, उनके जीवन में बिखराव आ जाता है। इसके विपरीत, यदि अभिभावक बच्चों के समुचित विकास में पूर्णसहयोग प्रदान करते हुए, अपने दायित्त्वों का निर्वहन करें तो बच्चों में दायित्त्वबोध जाग्रत होता है और वे अपने घर-परिवार तक ही सीमित न रहकर, समाज के प्रति भी कर्त्तव्यों का निवर्हन करना सीखते हैं; क्योंकि बालक को पहली सीख अपने परिवार या अध्यापक से मिलती है। अध्यापक बच्चे की दृष्टि में आदर्श होता है तथा उसका कथन अनुकरणीय, 'हमारे अध्यापक ने कहा है कि हम लोग...अपने-अपने घर में पॉलीथिन का प्रयोग एकदम बंद कर दें। हमारा इतना सा योगदान देशहित में बड़ा क़दम होगा।... ... ...माँ आज से मैं ऐसी कोई चीज़ नहीं खाउँगा जो पॉलीथिन में आएगी... ... ...अतुल की गाय याद है न आपको?... ... ...आज उसने सब्जी के लालच में पॉलीथिन सहित उसे खा लिया, दम घुटने से उसकी मौत हो गई।... .... नितिन की आँखों में आँसू थे।... ... ...मेरा तुमसे वादा है आज से तुम्हारे घर में पॉलीथीन नहीं आयेगी।' बेटे को कुर्सी में बैठाकर, माँ खाने की मेज के पास जाकर खड़ी हो गयी और सारे पॉलीथीन खाली करने लगी। 'इनका क्या करेंगी माँ?'... ... ...'एक पैकेट में भर कर रखूँगी। कल जब म्युनिसिपालिटी वाला कूड़ा उठाने आयेगा तो दे दूँगी। सड़क पर नहीं फेकूंगी। किसी निर्दोष प्राणी की मौत का कारण नहीं बनूंगी।'[11]

कल्पनाशीलता ऐसा गुण है जो उन्नति के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है। यदि एक व्यक्ति अपने बाल्यकाल सेही अच्छा और प्रतिष्ठित आदमी बनने की कल्पना करता है तो परिश्रम के बल पर,एक दिन उसकी कल्पना अवश्य साकार हो उठती है। कल्पना में वह शक्ति है जो बालक के भीतर की बुराई को भी समाप्त कर सकती है। ऐसी ही सुन्दर कल्पना का समावेश है, नीलम राकेश की कहानी 'फूल का दर्द' में। उदित और मोहित जो कि हमेशा फूल तोड़ने और बगीचा उजाड़ने का कार्य करते थे, एक दिन उदित को सपना हुआ कि वह सूरजमुखी का फूल बन गया है, तब उसे अनुभव हुआ कि फूलों को भी दर्द होता है,'नहीं, नहीं... रूको-रूको दोस्त ये मेरा हाथ है। उदित चीखता रहा पर मोहित को कुछ सुनाई नहीं दिया और उसने कली तोड़ ली। उदित जोर से चीखा नहीं... बचाओ... बचाओ... और उदित की आँख खुल गई।... ... ...'क्या हुआ बेटा कोई बुरा सपना देखा क्या?' माथे पर छलक आये पसीने को पोंछता हुआ उदित बोला, 'बुरा नहीं माँ एक अच्छा सपना, जिसने मुझे फूलों का दर्द दिखला दिया। आज के बाद मैं, कभी फूल नहीं तोड़ूँगा।'[12]

नीलम राकेश ने बालकहानियों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि यथार्थ और कल्पना के माध्यम से नैतिकता की अभिव्यक्ति स्वत: होती दिखाई देती है, पाठक को उसे खोजने का प्रयास नहीं करना पड़ता। 'सेवा का फल' कहानी में, सुरभि और सौरभ दो भाई-बहिन हैं। सुरभि सड़क पर पड़े, एक लाचार पालतू कुत्ते को उठाकर अपने घर ले आती है। उसके भाई को यह बिल्कुल पसंद नहीं आता, वह सुरभि की शिकायत माँ से करता है; परन्तु माँ अपनी बेटी के इस कृत्य से अत्यंत प्रसन्न होती है। सुरभि को अपने इस नैतिक कर्त्तव्य का फल तब प्राप्त होता है, जब टॉमी, सुरभि के प्राणों की रक्षा करता है, 'एक दिन जब दोनों भाई बहिन अपने दोस्त के घर से खेलकर वापस आ रहे थे, अचानक सुरभि का पैर केले पर पड़ा और वह फिसल कर सड़क किनारे तालाब में गिर गई। सौरभ ने आस-पास देखा, दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। सुरभि को डूबता देख

10. हिम्मत ने जीती बाजी- पृ.सं. 62-63, सन् 2006 अंकिता प्रकाशन, इलाहाबाद

11. ठग से ठगी- पृ.सं. 26-27,सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद

12. ठग से ठगी- पृ.सं. 69-70, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद

सौरभ के हाथ-पैर फूल गए। वह अपनी बहन को डूबता देख नहीं सकता था लेकिन वह लाचार था, उसे तैरना नहीं आता था। सौरभ जोर-जोर से रोने लगा। तभी सौरभ ने देखा, टॉमी पानी में कूद कर सुरभि के पास पहुँच चुका था। सुरभि की फ्रॉक खींचकर बाहर ला रहा था। जैसे ही टॉमी और सुरभि बाहर आए, सौरभ ने टॉमी को गोद में उठा लिया और सुरभि से बोला, 'तुमने सच कहा था, सेवा का फल मीठा होता है। आज से मैं भी सब के प्रति दया का भाव रखूँगा और सेवा करने का कोई मौका नहीं चूकूँगा।'[13]

प्राय: घर के सदस्य बच्चों को सद्चरित्र, परिश्रमी तथा लगनशील बनाने के लिए तरह-तरह से प्रेरित करते रहते हैं, किन्तु उन लोगों को इसके विपरीत आचरण करते देखकर, बच्चे उनके द्वारा दिये गए उपदेशों को महत्त्व नहीं देते, 'लौट आया बचपन' कहानी का मुख्य पात्र है, निलय। जिसके माता-पिता उसकी मानसिक स्थिति समझे बिना उस पर पढ़ाई का बोझ डालते रहते हैं। अधिक दबाव के कारण वह परीक्षा में माता-पिता की इच्छा के अनुरूप अंक प्राप्त नहीं कर पाता; किन्तु जब वह अपने दादा जी का अनुसरण करता है तो उसके क़दम स्वत: सफलता की ओर बढ़ने लगते हैं, 'बाबा-पोता दोनों मिलकर पढ़ाई में जुट गए। शाम के पाँच बजते ही बाबा बोले, 'अब पढ़ाई बन्द। अब तुम्हारे खेलने का समय है। जाओ एक घण्टा खेल कर आओ।' निलय को तो जैसे कोई वरदान मिल गया हो। वह जूता पहनकर सरपट भागा। परन्तु ठीक एक घण्टे बाद वापस आकर वह बाबा से पूछ रहा था, 'अब क्या करना है बाबा जी?' 'कुछ खा पी लो, फिर जो दिन में पढ़ा उसे दोहराएँगे। बस फिर सोना है। आज काफी पढ़ाई हो गई है।'... ... ...'बाबा जी आज का पढ़ना मुझे अच्छा लगा। बिल्कुल बोझ नहीं लगा।' खुशी से चहकता हुआ निलय बोला।

'पढ़ाई का बोझ होना भी नहीं चाहिए। जरूरत होती है, पढ़ाई और खेल के सही संतुलन की। जब यह संतुलन बिगड़ता है तभी समस्या आती है।'[14]

यथार्थ को आधार बनाकर, नीलम राकेश ने अपहरण, कम्प्यूटर का महत्त्व, जीव प्रजाति विशेषता आदि तथ्यों को भी मूल्यांकित किया गया। 'पंतग का कमाल' कहानी बच्चों को बुद्धिचातुर्य द्वारा आत्मरक्षा करना सिखाती है। वर्तमान समय में व्यक्ति अपने लाभ के लिए, अपनों को ठगने, धोखा देने तथा विश्वासघात करने में भी नहीं हिचकिचाता; स्वार्थपरता में लिप्त रहने के कारण वह संवेदनाशून्य होता जा रहा है। प्रस्तुत कहानी में अपहरणकर्त्ताओं से सतर्क रहने की प्रेरणा दी गई है। जब एक विश्वासपात्र मुनीम अपने मालिक के बच्चे का अपहरण कर लेता है तो इंस्पेक्टर उसके मालिक से पूछता है,'ये आपके मुनीम जी कैसे व्यक्ति हैं?' 'वैसे आदमी तो ठीक हैं। काफी पुराना आदमी है। अपना काम बहुत अच्छी तरह करता है। बस थोड़े समय से इसे सट्टे की लत लग गई है। अभी उसे दो लाख का नुकसान हो गया था। मुझसे माँग रहा था। मैंने सट्टे के लिए पैसा देने से मना कर दिया है....लेकिन....आप ये क्यों पूछ रहे हैं?'... ... ...

'यह देखिये, आपके बच्चे की लिखावट है क्या?'

हाँ...' फटी-फटी आँखों से सेठ जी पतंग के ऊपर लिखे शब्द पढ़ रहे थे।

'कृपया मेरे पिता सेठ मनोहर अग्रवाल को इस फोन नम्बर 133002 पर खबर कर दें कि मुझे मुनीम अंकल ने पीछे वाली कोठरी में रखा है।'[15] इस तरह अपने बुद्धिकौशल से बच्चा, आत्मरक्षा करने के साथ ही मुनीम जैसे आस्तीन के साँप को सज़ा दिलाने में भी सफल होता है।

कल्पना के रंगों से सजा-संवरा, यथार्थ का प्रतिबिम्ब नीलम राकेश की बालकहानियों में यत्र-तत्र देखा जा सकता है; 'कम्प्यूटर और चीकू' एक ऐसी ही कहानी है। जिसमें उन्होंने खरगोश चीकू, उसके मित्र मीकू और टुकटुक गिलहरी के मध्य वार्तालाप प्रस्तुत करके, बच्चों को नाटकीय शैली में कम्प्यूटर का आविष्कार, विषयक ज्ञान प्रदान किया है, 'चंपक वन में खूबसूरत शाम थी।... ... चीकू खरगोश का मन नहीं लग रहा था। उसका साथी मीकू अभी तक नहीं आया था।

टुकटुक, चलो मीकू को उसके घर से बुला लाते हैं।'... ... ...मीकू तुम्हें पता है कम्प्यूटर का आविष्कार किसने किया था?' ...'नहीं।' लम्बे-लम्बे कान हिलाता हुआ मीकू बोला।

'चार्ल्स बैबेज ने सबसे पहले कम्प्यूटर जैसी मशीन की परिकल्पना की थी।'

'अरे, तुम्हें तो बड़ी जानकारी है चीकू' टुकटुक बोली।

'बहुत तो नहीं, लेकिन इतना पता है कि कम्प्यूटर के जनक का जन्म 26 दिसम्बर 1791 को इग्लैण्ड में हुआ था।'

'उन्होंने कम्प्यूटर कैसे बनाया?'[16] इस तरह लेखिका बच्चों में उत्तरोतर जिज्ञासा उत्पन्न करती हुई, उन्हें एक विशिष्ट व्यक्ति

13. ठग से ठगी- पृ.सं. 74, सन् 2009, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद
14. फूलों की बगिया- पृ. सं. 19,सन् 2009, न्यू कॉन्सपैट्स पब्लिशर्स, दिल्ली
15. फूलों की बगिया- पृ. सं. 17,सन् 2009, न्यू कॉन्सपैट्स पब्लिशर्स, दिल्ली
16. फूलों की बगिया- पृ. सं. 10-11, सन् 2009, न्यू कॉन्सपैट्स पब्लिशर्स, दिल्ली

केव्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित करा देती है।

कहानियाँ बालमन को बाँधे रखने में सहायक होती हैं, इनके द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान अधिक सशक्त तथा दूरगामी प्रभाव वाला होता है। कहानी के नायक को अपना आदर्श बनाकर, बच्चे उसके कृत्यों को सीख के रूप में ग्रहण करते हैं और आत्मसात करके,उसके जैसा बनने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। 'एक सीख जार्ज वाशिंगटन से' इस कहानी में, जार्ज वाशिंगटन की ईमानदारी से प्रभावित होकर, बच्चा यह निर्णय लेता है कि वह भी जीवनभर ईमानदार एवं हिम्मती बनेगा, 'एक दिन नन्हा जार्ज वाशिंगटन अपनी कुल्हाड़ी लेकर झाड़ियाँ काटने लगा, 'इस काम में वह इतना डूब गया कि उसे पता ही नहीं चला कि कब उसने अपने पिता के प्रिय पौधे को भी काट डाला। यह पौधा चैरी का था जोकि उनके किसी मित्र ने उन्हें भेंट में दिया था। इसलिए उन्हें यह बहुत प्रिय था।'... ... ...एक पल को पिता ने बेटे को घूर कर देखा फिर पूछा, 'तुमने यह पौधा क्यों काटा?'

'मैं खेल रहा था।.... गलती से कट गया।' डरते-डरते जॉर्ज ने जवाब दिया।

डर से सहमे हुए जॉर्ज को गले लगाकर पिता प्यार से बोले, 'बेटा मुझे इस बात का दु:ख तो जरूर है कि एक अच्छा, स्वस्थ्य पौध जो कल पेड़ बनकर बहुत फल देता, तुम्हारी भूल से वह मर चुका है।... परन्तु मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे बेटे में सच बोल पाने की हिम्मत है। बेटा मुझे तुम पर गर्व है। हमेशा ऐसे ही सच्चाई, ईमानदारी और साहस की राह पर चलना।'[17]

इस तरह की कहानियाँ जहाँ एक ओर, बच्चों में मानवीयमूल्यों को विकसित करती हैं, वहीं दूसरी ओर प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूक भी करती है। नीलम राकेश ने कल्पना को आधार बनाकर कहानियों में नवीनता का समावेश किया है। कल्पना को व्यवहार में क्रियान्वित करके भी पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है; नीलम राकेश की कहानी इस कथन का उदाहरण है। किसी भी व्यक्ति अथवा स्थान के नाम की सार्थकता उसके गुणों के कारण होती है। लेखिका ने बालकों को जागरूक करने के लिए, ऐसी सुन्दर कल्पना की है जो उन्हें अपना पर्यावरण संवारने के लिए प्रेरित करती है। आमघाट में रहने वाली बालिका सपना अपने मोहल्ले का नाम सार्थक करने के लिए अन्य बच्चों को भी प्रेरित करती हुई कहती है, 'हम सब मिलकर अपनी कालोनी में ढेर सारे आम के पेड़ लगाएँगे। उनकी देखभाल करेंगे और अपनी कॉलोनी को आम के पेड़ों से भरकर सचमुच आमघाट कहलाने योग्य बना देंगे।'... ... ...पौधे लग जाने के बाद बच्चे मुग्ध भाव से अपने नन्हें-नन्हें पौधों को लहराता देखा करते थे। नित शाम को पौधों को पानी देना, उनकी निराई, गुड़ाई करना अब बच्चों की दिनचर्या का हिस्सा बन गया था।'[18]

प्राकृतिक संतुलन द्वाराही स्वस्थ वातावरण का निर्माण संभव है; अत: नीलम राकेश ने अपनी कहानियों में काल्पनिक दृश्यों की सर्जना करके, बच्चों को स्वच्छता, पर्यावरण तथा जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने का सफल प्रयास किया है। एक ओर वे, 'मैं कल एक गाँव में गया था, वहाँ के शिक्षक ने गाँव के हैण्डपम्प से निकलने वाले अतिरिक्त जल को नालियों द्वारा बड़े गड्ढ़ों में जाने की व्यवस्था कर रखी थी और उन गड्ढ़ों में अनेक पतली नालियों द्वारा गाँव के वृक्षों की सिंचाई होती है।'[19] कहकर, जलसंरक्षण करने तथा अपने परिवेश को हरा-भरा रखने का संदेश देती हैं तो दूसरी ओर,बच्चों को अपनी छुट्टियों का सदुपयोग करने तथा अपने गाँव को निर्मल रखकर, उसे रोगमुक्त करने की प्रेरणा देती हैं। 'अनोखी छुट्टियाँ' कहानी में, चिंकी और पिंकी अपनी दादी के साथ गाँव जाती हैं। वहाँ का प्राकृतिक वातावरण उन्हें मंत्रमुग्ध तो करता है; किन्तु गाँव में यहाँ-वहाँ गड्ढ़ों में जल-भराव तथा कीचड़ देखकर, पिंकी दादी से कहती है, 'दादी गाँव में बहुत कीचड़ है। जहाँ-जहाँ भी हैण्डपम्प हैं या कुआँ है, वहाँ बहुत फिसलन है।' यह सुनकर दादी सुझाव देती हुई कहती हैं, 'पिंकी, क्यों न हम एक बच्चों की टोली बनाएँ और उनके साथ मिलकर, गाँव के लोगों को सफाई का महत्त्व और जलभराव से होने वाली बीमारी के बारे में बताएँ।'... ... ...'पिंकी को दादी का सुझाव पसन्द आया। अगले दिन से ही दादी ने बच्चों को विभिन्न कहानी, किस्सों के माध्यम से सफाई और पानी का महत्त्व जैसी महत्त्वपूर्ण बातें बताना आरम्भ कर दिया, फिर एक बाल-दल का गठन हुआ और दादी का यह बाल-दल पिंकी के नेतृत्व में घर-घर जाकर ज्ञान की बातें बताने लगा।... ... ...दादी के निर्देशन में सभी हैण्डपम्पों के पास एक-एक गड्ढा खोदा गया जिससे कई पतली-पतली नालियाँ बनाकर अनेक पेड़ों को हैण्डपम्प से जोड़ा गया। थोड़े ही दिनो में लोगों को अन्तर महसूस होने लगा। हैण्डपम्प से निकला फालतू पानी चारों ओर फैलने के स्थान पर गड्ढों में एकत्र होता और गड्ढों के भरने पर नालियों से होता हुआ पेड़ो में चला जाता। अब न तो कीचड़ होता, न ही

शेष पृष्ठ 106 पर

17. फूलों की बगिया- पृ. सं. 32, 34, सन् 2009, न्यू कॉन्सपैट्स पब्लिशर्स, दिल्ली
18. फूलों की बगिया- पृ. सं. 24-25, सन् 2009, न्यू कॉन्सपैट्स पब्लिशर्स, दिल्ली
19. क्रिकेट का कमाल- पृ.सं. 27, 30 सन्2016, ग्लोबल विज़न पब्लिशर्स, नई दिल्ली